References

- Census of India, 2011.
- Census of India, 2001.
- Chandra, J. (1993): Women and Child-A paradigm for rural development, Rawat Publications, Jaipur
- Dutta and Sunharam (2003) : Indian Economy, (47th ed). S. Chand and company limited, New Delhi.
- Kendall, M.G. (1939): 'The Geographical Distribution of crop productivity in England'. Journal of Royal statistics society, 162.
- Knox, P.L. (1975): Social well-being: spatial perspective, University press, Oxford.
- Nanavati, M.B., (1957) : Reading in land utilization : In Indian Agricultural Economics, Mumbai.

  Qasi, S.Z. (1993): Science and Quality of life, Presidential Address, 80th Indian Science Congress, Goa: 1-13.
- Rafiullah, S.M. (1956) : ' A New Approach to Functional classification of Towns'. The Geographer, Vol. 8.
- Sahai, V. N. (2004) : Fundamentals of Social, Kalyani Publishers, New Delhi.
- Shukla, T.N. (2004) : The West Bengal land reform Act, 1955, Kamala Law Hosue, Kolkata.

  •Stamp, L.D (1962) : The land of Britain, Its use and Misuse, (2nd ed). Longmans, Green and Co. Limited, London.

बिहार में 1999 का लोकसभा चुनाव में मतदान व्यवहार की स्थिति

डॉ० शैलेश कुमार*

1990 के दशक में बिहार में हुए हर चुनाव की भाँति 1999 के लोकसभा चुनावों में भी प्रमुख मुद्दा लालू प्रसाद ही थे। लालू के सामाजिक न्याय की राजनीतिऔर मजबूत सामाजिक आधार को कोई भी विपक्षी दल तगड़ी चुनौती देने में सफल नहीं हो पाया था। भाजपा–समता पार्टी गठबंधन ने लालू को चुनौती दी, लेकिन वे लालू को निर्णायक रूप से हराने में कामयाब नहीं हो पाए। इन चुनावों से पहले लालू विरोधी राजनीतिक ताकतों की एकजुटता बढ़ी। समता पार्टी और जनता दल का विलय हो गया और जनता दल (यूनाइटेड) का गठन हुआ। जद (यू) केंद्रीय स्तर पर भाजपा के नेतृत्व में बने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) का हिस्सा बन गया। बिहार में भाजपा–जद (यू) ने समता पार्टी के समय से चला आ रहा अपना पुराना गठबंधन कायम रखा। भाजपा ने 29 सीटों पर उम्मीदवार खड़े किए और 23 सीटों पर जद (यू) ने उम्मीदवार खड़े किए। एक सीट इन्होंने अपने तीसरे साझीदार बिहार पीपुल्स पार्टी (बिपीपा) के लिए छोड़ी। कांग्रेस और राजद ने चुनावी गठबंधन किया। इस बार दोनों दलों ने आपसी गठबंधन को जमीनी स्तर पर लागू करने की कोशिश की। राजद ने 38 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए और बाकि 16 सीटें इसने कांग्रेस के लिए छोड़ दीं। इन चुनावों में वामपंथी दलों ने राजद या किसी दूसरे दल से कोई गठबंधन नहीं किया और अपने सीमित प्रभाव वाले क्षेत्र में इन्होंने अपना उम्मीदवार खड़ा किया। वास्तव में ये चुनाव पूरी तरह दो ध्रुवीय थे– एक ध्रुव पर भाजपा गठबंधन था और दूसरे ध्रुव पर राजद गठबंधन।

लालू प्रसाद और उनके दल की सरकार ने विकास का कोई भी उल्लेखनीय काम नहीं किया था। विपक्षी भाजपा गठबंधन ने उनके शासन को 'जंगल राज' की संज्ञा दी। लालू के लिए इस बार चुनौती बहुत मुश्किल थी। समता पार्टी और जनता दल के विलय के कारण भाजपा गठबंधन का दलितों और अन्य पिछड़ी जातियों में आधार बढ़ा था। लालू ने मतदाताओं से सांप्रदायिक भाजपा

***असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,राम रतन सिंह मेमोरियल डिग्री कॉलेज,जाहिदपुर, शाहाबाद, रामपुर (उत्तर प्रदेश)**

के खिलाफ संघर्ष के लिए समर्थन माँगा। उनका पूरा जोर 'मुस्लिम–यादव' आधार को जमीनी स्तर पर मजबूती से प्रभावी करने पर था। उन्हें भरोसा था किकांग्रेस के ऊँची जाति वोटों के जुड़ने से उनकी जीत सुनिश्चित हो सकेगी। विकास के अभाव के लिए लाल ने भाजपा के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार द्वारा बिहार की उपेक्षा किए जाने को जिम्मेदार ठहराया।

इन चुनावों में लालू के नेतृत्व वाले राजद गठबंधन को सीटों के संदर्भ में जबर्दस्त नुकसान हुआ। खुद लालू को मधेपुरा संसदीय सीट से शरद यादव के हाथों हार का मुंह देखना पड़ा। वोटों के संदर्भ में अब भी यह राज्य का सबसे बड़ा दल था। लेकिन भाजपा गठबंधन ने वोटों और सीटों दोनों ही मामलों में राजद से निर्णायक बढ़त हासिल की। इन चुनावों में भाजपा और इसके सहयोगी दल जद (यू) को कुल मिलाकर 45.5 फीसद वोटों के साथ 42 संसदीय क्षेत्रों में जीत मिली। भाजपा ने 29 संसदीय क्षेत्रों में अपना उम्मीदवार खड़े किए थे। इसे 23. 01 फीसद वोट मिले और 23 सीटों पर जीत मिली। जद (यू) ने 24 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए थे। इसे 20.77 फीसद वोट मिले और 18 संसदीय क्षेत्रों में जीत मिली। एक सीट पर भाजपा गठबंधन की तीसरे सहयोगी दल बिपीपा को जीत मिली। राजद गठबंधन को 11 सीटों पर जीत मिली और इसे 37.1 फीसद वोट मिले। राजद ने 28.29 फीसद वोटों के साथ 7 सीटों पर जीत हासिल की। कांग्रेस को 8.81 फीसद वोटों के साथ 4 सीटों पर जीत मिली। एक संसदीय क्षेत्र में भाकपा को जीत मिली।

दरअसल, यह चुनाव पिछले तीन चुनावों में सबसे नजदीकी मुकाबला वाला चुनाव था। अधिकांश सीटों पर दोतरफा संघर्ष था। राज्य के कुल 54 लोकसभा क्षेत्रों में 23 क्षेत्रों में हार–जीत 5 फीसद से भी कम मतों के अन्तर से हुई। इन चुनावों में राजद–कांग्रेस गठबंधन को पिछले चुनावों की तुलना में 11 सीटों का नुकसान हुआ। लेकिन यह महत्त्वपूर्ण है कि वोटों के संदर्भ में राजद अभी भी राज्य का सबसे बड़ा दल था। 1998 के लोकसभा चुनावों की तुलना में इस बार राजद के वोटों में तकरीबन 3 फीसद से कुछ अधिक की बढ़ोतरी हुई।

लेकिन राज्य में भाजपा–जद (यू) गठबंधन की जीत भाजपा का उभार नहीं था। पिछले चुनावों की तुलना में इसकी सीटें बढ़ी, लेकिन इसके वोटों में एक फीसद की गिरावट आई। भाजपा को दक्षिण बिहार में 14 सीटों में से 11 सीटों पर जीत मिली। लेकिन इसे यहाँ भी पिछले चुनावों की तुलना में 1 सीट का नुकसान हुआ। इन चुनावों में भाजपा–जद (यू) गठबंधन की जीत में समता पार्टी और जनता दल के विलय से बने जद (यू) की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही। इसके अलावा, भाजपा–जद (यू) और बिपीपा के मजबूत चुनावी गठजोड़ ने लालू यादव

विरोधी वोटों को आसानी से अपनी ओर खींचा। इन चुनावों में पिछड़ी जातियों से 19 सदस्य लोकसभा में चुने गये और ऊँची जातियों से 18सदस्य लोकसभा का चुनाव जीतने में सफल रहे। 1998 के लोकसभा चुनाव में पिछड़ी जाति से 24 और ऊँची जातियों से 13 सदस्य लोकसभा चुनाव जीतने में सफल रहे थे। राजद की चुनावी हार के कारण पिछड़ी जाति से जीतने वाले सदस्यों की संख्या में कमी आई।

सारणी–1

1999 के लोकसभा चुनावों में विभिन्न जातियों और समूहों का मत–रुझान (प्रतिशत में)

	भाजपा +	राजद +
ऊँची जातियाँ	77	8
यादव	22	76
कुर्मी और कोइरी	71	19
अन्य पिछड़ी जातियाँ	58	27
दलित (अनुसूचित जातियाँ)	47	43
मुस्लिम	7	82

नोट :

भाजपा + = भाजपा और जद (यू) ।

राजद + = कांग्रेस और राजद ।

स्त्रोत : नेशनल इलेक्शन स्टडी, 1999, सी०एस०डी०एस० डेटा यूनिट, विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी०एस०डी०एस०) दिल्ली।

सारणी–1 में 1999 के लोकसभा चुनावों में विभिन्न जातियों और समूहों के मत–रुझान को दिखाया गया है। इन चुनावों में अधिकांश सीटों पर भाजपा–जद (यू) गठबंधन और राजद–कांग्रेस गठबंधन में सीधा संघर्ष हुआ। सारणी–4.6 से स्पष्ट है कि ऊँची जातियाँ और यादवों का मत–रुझान 1998 की भाँति ही रहा। ऊँची जातियों के 77 फीसद वोट भाजपा गठबंधन को मिले। इसी तरह से यादवों के 76 फीसद वोट राजद गठबंधन को मिले। कुर्मी–कोइरी वोट पिछले चुनावों की तुलना में इस बार ज्यादा मुखर रूप में भाजपा गठबंधन के पक्ष में गोलबंद हुआ। इसके पीछे नीतीश कुमार की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। इस बार भाजपा गठबंधन को कर्मी–कोइरी के 71 फीसद वोट मिले, जबकि 1998 के लोकसभा चुनावों में कर्मी–कोइरी के 56 फीसद वोट ही इस गठबंधन को मिले थे। मुस्लिम इस चुनाव में ज्यादा मुखर रूप से राजद गठबंधन के पक्ष में झुके। 1998 के लोकसभा चुनावों में 60 फीसद मुस्लिमों ने राजद को वोट दिया था। इस बार राजद गठबंधन को मुस्लिमों के 82 फीसद वोट मिले। भाजपागठबंधन को असली फायदा अन्य पिछड़ी

जातियों (इसमें बनिया के अलावा सभी निम्न पिछड़ी जातियाँ शामिल हैं) और अनुसूचित जनजातियों के वोटों के संदर्भ में हुआ। 1998 के लोकसभा चुनावों में भाजपा गठबंधन को अन्य पिछड़ी जातियों के 40 फीसद वोट मिले थे। इस चुनाव में इस गठबंधन को अन्य पिछड़ी जातियों के 58 फीसद वोट मिले। राजद गठबंधन को अन्य पिछड़ी जातियों के मात्र 27 फीसद वोट मिले। भाजपा गठबंधन को अन्य पिछड़ी जातियों के वोटों का फायदा जद (य) नेताओं के प्रयासों के कारण हआ। ये नेता समता पार्टी के गठन के बाद से ही इस बात पर जोर दे रहे थे कि लालू का शासन सिर्फ एक जाति के दबंग तबके का वर्चस्व है और दूसरी पिछड़ी जातियों को इस शासन में कुछ भी नहीं मिला। अनुसूचित जातियों के वोटों के संदर्भ में भी भाजपा गठबंधन को फायदा हुआ। 1998 के 24 फीसद वोटों की तुलना में इस बार भाजपा गठबंधन को दलितों के 47 फीसद वोट मिले। राजद गठबंधन को दलितों के 43 फीसद वोट मिले। भाजपा गठबंधन को दलित वोटों का फायदा रामविलास पासवान के जद (यू) में शामिल होने के कारण हुआ।

स्पष्टतः इन चुनावों में काफी नजदीकी मुकाबला हुआ। भाजपा गठबंधन की जीत में जद (यू) नेताओं की भूमिका ज्यादा महत्त्वपूर्ण थी, क्योंकि इन्हीं के कारण अन्य पिछड़ी जातियों और दलितों के वोट भाजपा गठबंधन के पक्ष में गोलबंद हुए। साफ तौर पर इन चुनावों का नतीजा लालू के लिए खतरे की घटी थी। लालू का 'मुस्लिम–यादव' आधार मजबूती से उनके साथ जुटा रहा। इसके बावजूद उनके गठबंधन को चुनावों में हार का मुँह देखना पड़ा। 1999 के चुनावों के नतीजों ने इस मिथक को भी तोड़ा कि लालू अपने मजबूत 'मुस्लिम–यादव' सामाजिक आधार के कारण अपराजेय हैं। लालू की कामयाबी के पीछे मुस्लिम–यादव सामाजिक आधार के साथ ही साथ अन्य पिछड़ी जातियों और दलितों के समर्थन की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। 1999 के लोकसभा चुनावों में अन्य पिछड़ी जातियों और दलितों का यह आधार बड़ी मात्रा में भाजपा–जद(यू) गठबंधन से जुड़ा। इस कारण, राजद गठबंधन चुनावी दंगल में औंधे मुँह गिरा।

राष्ट्रीय स्तर पर 1999 के लोकसभा चुनावों के बाद लोकसभा में भाजपा और उसके सहयोगी दलों की सीटें 253 से बढ़कर 296 हो गई। केन्द्र में अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार ने अक्टूबर के दूसरे सप्ताह में सत्ता सँभाली। वाजपेयी मंत्रिमंडल में बिहार के कई नेताओं को शामिल किया गया। इनमें जार्ज फर्नाण्डिस, नीतीश कुमार, शरद यादव और रामविलास पासवान प्रमुख थे। बिहार के आगामी विधानसभा चुनावों के संदर्भमें यह इन नेताओं के लिए सुनहरा मौका था। ये नेता लालू राज को 'जंगल राज' मानते थे। अब इनके लिए विकास योजनाओं को लागू कर लालू के शासन का

विकल्प पेश करने का मौका था। लालू–राबड़ी का शासन कानून–व्यवस्था और विकास के संदर्भ में पूरी तरह नाकाम था। लालू–राबड़ी के लिए अपनी सत्ता को कायम रखना एक चुनौती बनगया। इस लिहाज से लालू और विपक्षी भाजपा–गठबंधन दोनों ही के लिए फरवरी, 2000 का विधानसभा चुनाव महत्त्वपूर्ण हो गया।

संदर्भ सूची

1. संजय कुमार : न्यू फेज इन बैकवर्ड कास्ट पॉलिटिक्स इन बिहार, घनश्याम शाह (सं०) कास्ट एण्ड डेमोक्रेटिक पॉलिटिक्स इन इंडिया, परमानेण्ट ब्लैक, नई दिल्ली, 2002, पृ० 328.
2. नेशनल इलेक्शन स्टडी, 1999, सी० एस० डी० एस० डेटा यूनिट, विकासशील समाज अध्ययन पाठ (सी० एस० डी० एस०) दिल्ली ।